“छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग का विकास एवं संभावनाएँ”
(धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोध विषय ''छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग का विकास एवं संभावनाएं'' (धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में) को अध्ययन की दृष्टि से दस अध्यायों में वगीकृत कर गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करने के पश्चात् निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत शोध विषय का चयन, अध्ययन का उद्देश्य, क्षेत्र, परिकल्पनाएं एवं शोध प्रविधि, अध्ययन की सीमाएं, शोध प्रबंध की रूपरेखा तथा उपलब्ध साहित्य की विवेचना की गई है।

लाख उद्योग लघु एवं कुटीर उद्योग की श्रेणी के अंर्तगत आता है, लघु एवं कुटीर उद्योगों को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। भारत विश्व में लाख का सबसे बड़ा उत्पादक एवं निर्यातक देश है। छत्तीसगढ़ देश के प्रमुख लाख उत्पादक राज्यों में से एक है एवं धमतरी जिले का लाख उद्योग के क्षेत्र में राज्य मे विशिष्ट स्थान है, क्योंकि राज्य की सर्वाधिक लाख इकाईयां जिले में केन्द्रित है। लाख के विशेष गुणों एव महत्ता के कारण इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है, जिससे इसकी मांग में वृद्धि हो रही है। अतः लाख उद्योग का निर्यात राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान है एवं श्रम प्रधान होने के कारण आर्थिक विकास में उल्लेखनीय भूमिका है अतः अध्ययन की विषय वस्तु के रूप में लाख उद्योग का चयन किया गया है।

शोध विषय के अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ एवं धमतरी जिले में लाख उद्योग की वर्तमान स्थिति एवं संगठन संरचना का अध्ययन करना तथा राज्य एवं जिले मे लाख उद्योग के विकास की संभावनाओं का पता लगाना है। इसके अतिरिक्त उद्योगों में श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन एवं वित्तीय संसाधनों का विश्लेषण करना है। लाख के

विपणन प्रबंध का अध्ययन तथा निर्यात की संभावना का पता लगाना तथा उद्योग की समस्याओं का अध्ययन कर सुझाव देना भी अध्ययन का उद्देश्य है।

संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में विभिन्न स्थानों में कार्यरत लाख उद्योग की इकाईयां अध्ययन का क्षेत्र है। राज्य में कार्यरत कुल 26 इकाईयों में से 14 इकाईयां धमतरी जिले में है। धमतरी जिले के कुल क्षेत्रफल का लगभग 52 प्रतिशत वनक्षेत्र के अंर्तगत आता है इसलिये वनोपज पर आधारित लाख उद्योग के लिये कच्चामाल जिले में आसानी से उपलब्ध है इसके अतिरिक्त जिले में लाख उद्योग के अनुकूल वातावरण एवं आवश्यक सभी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होने के कारण इसके विकास एवं नये उद्योग की स्थापना हेतु अपार संभावनाएं है इन कारणों से मैने अपने अध्ययन क्षेत्र को विशिष्टीकृत करते हुए धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में सीमित किया है।

शोध विषय से संबंधित परिकल्पनाएं निम्न है :

1. लाख उद्योग के लिए आवश्यक कच्चा माल, कुशल श्रमिक एवं उपयुक्त वातावरण छत्तीसगढ़ में उपलब्ध है, अतः छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग के विकास की अपार संभावनाएँ है।
2. लाख से बनी वस्तुओं की विदेशों में पर्याप्त मांग है, अतः लाख के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित करने के पर्याप्त अवसर है।
3. लाख उद्योग श्रम प्रधान होने के कारण लाख उद्योग रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम है।

- शोध उध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये प्राथामिक एवं व्दितीयक समंको को आधार बनाकर विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक संमको के लिये अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्याम से आवश्यक सूचनाएं एवं समंक प्राप्त

कर गहन अध्ययन किया गया है। व्दितीयक संमंको के लिए प्रकाशित स्त्रोत जैसे–लाख से संबंधित प्रकाशित पुस्तकें, वन विभाग व्दारा प्रकाशित जानकारियॉ एवं पत्रिकाऍ, भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रॉची व्दारा प्रकाशित पत्रिकाऍ, विभिन्न समाचार पत्र, जिला सांख्यिकी पुस्तिका आदि का तथा अप्रकाशित स्त्रोत जैसे **IINRG,** रांची, छत्तीसगढ़ राज्य लघुवनोपज (व्या.एवं वि.) सह. संघ मर्यादित रायपुर आदि कार्यालयों में अप्रकाशित रूप में रखे गए प्रतिवेदन, सूचनाऍ एवं संमको आदि का प्रयोग किया गया है।

स्त्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं समंको के संपादन के पश्चात् इनका वर्गीकरण एव सारणीयन किया गया है। तुलनात्मकता एवं गणितीय शुद्धता के लिए प्रतिशत, ग्राफ, रेखाचित्र एवं प्रबंधकीय लेखाकंन के विभिन्न सूत्रों की सहायता ली गई है जिनके माध्यम से अंको को सरल एवं तुलनात्मक रूप में व्यक्त करना एवं विश्लेषण संभव हुआ है।

शोध विषय का अध्ययन करते समय इस बात की कठिनाई अनुभव की गई कि लाख के क्षेत्र मे साहित्य का अभाव है तथा शोध कार्य की भी कमी है।

व्दितीय अध्याय में छत्तीसगढ़ का एतिहासिक, भौगोलिक एवं आर्थिक परिचय दिया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य का गठन 01 नवम्बर 2000 को देश के 26 वें राज्य के रूप में हुआ राज्य $17^0 46'$ उत्तरी अक्षांश से $24^0 5'$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^0 15'$ पूर्वी देशांतर से $84^0 20'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। राज्य का क्षेत्रफल 135191 वर्ग कि.मी. है। छत्तीसगढ़ की सीमाऍ 6 राज्यों झारखण्ड, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश को छूती है। प्रदेश की जलवायु उष्ण आद्र मानसून प्रकार की है जिसे उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु कहा जाता है राज्य की कुल जनसंख्या

25540196 है। जिसमें पुरूषों की संख्या 12827915 एव महिलाओं की संख्या 12712281 है राज्य में साक्षरता दर 71.04% है।

छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है राज्य की अधिकांश भूमि पर खाद्यान्नों का उत्पादन किया जाता है। यहां प्रमुख रूप से धान की खेती की जाती है। राज्य खनिज एवं वन संपदा से समृद्ध है खनिज उपलब्धता की दृष्टि से छत्तीसगढ़ का व्दितीय स्थान है। यहां लगभग 32 प्रकार के खनिज पाये जाते है, जैसे कोयला, चूना पत्थर, डोलोमाइट लौह अयस्क आदि। यहां राज्य में केन्द्रीय एवं स्थानीय स्तर के विभिन्न उद्योग विद्यमान है जैसे भिलाई इस्पात सयंत्र, सीमेंट उद्योग खनन उद्योग आदि इसके अलावा वनोपज पर आधारित लाख उद्योग एवं बीड़ी उद्योग भी स्थापित हुए है। राज्य में संसाधनों की प्रचुरता के कारण औद्योगीकरण के विकास की पर्याप्त संभावनाएं है।

तृतीय अध्याय में लाख का परिचय प्रकार महत्व, भारत में लाख का इतिहास तथा वर्तमान में भारत में लाख उत्पादन संबंधी तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। लाख **Kerria Lacca** नामक कीट से उत्पादित होने वाली प्राकृतिक राल है। सूक्ष्म लाख कीटों व्दारा अपनी सुरक्षा हेतु राल का स्त्राव कर कवच का निर्माण किया जाता है जो हमें लाख के रूप में प्राप्त होता है। लाख अपने विशिष्ट गुणो के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण उत्पाद है। भारत में व्यावसायिक लाख उत्पादन हेतु **Kerria Lacca** की दो प्रजातियों कुसुमी एवं रंगीनी का उपयोग होता है।

लाख कीट जिन पोधों या वृक्षों पर पनपते हैं, उन्हे लाख मेजबान कहा जाता है। मुख्य लाख मेजबान वृक्ष कुसुम, पलाश, बेर, घोंट, सेमियालता, गलवांग, खैर,

पुटकुल आदि हैं। कुसुम एक उत्कृष्ट लाख पालक वृक्ष है, जिस पर विश्व की सर्वोत्तम किस्म की कुसुमी लाख का उत्पादन किया जाता है।

लाख के विभिन्न प्रकार स्टिक लाख, शीड लैक, शैलेक, बटन लैक गारनेट लाख, ब्लीच्ड लाख, लैक डाई, लैक वैक्स आदि लाख के इन विभिन्न रूपों का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। लाख का प्रयोग वॉर्निश, पेंट बनाने, लकड़ी पर पॉलिश करने, दवाईयों एवं कैप्सूल पर कोटिंग के लिए, बिजली निरोधक नलिकाएँ एवं बैटरीयॉ आदि बनाने, चॉकलेट एवं फ्रूट कोटिंग के लिए, डेंटल प्लेट बनाने, ऑप्टिकल फ्रेम्स, टाईल्स, ग्लेज्ड पेपर, लाख की चुडियॉ, सौन्दर्य प्रसाधन बनाने, आयुर्वेदिक दवाईयॉ बनाने, कपड़ो को रंगने तथा रबर एवं एल्युमिनियम आदि इण्डस्ट्री में किया जाता है।

भारत में लाख का प्रयोग अति प्राचीन काल से किया जा रहा है। वेदों में भी इसका उल्लेख है। प्रांरभ में विश्व में भारत ही लाख का एक मात्र उत्पादक देश था। इसके पश्चात् लाख की उपयोगिता एवं बढ़ती मांग को देखते हुए अन्य देशों जैसे थाइलैण्ड, इण्डोनेशिया व चाइना आदि देशों के व्दारा भी लाख उत्पादन प्रांरभ किया गया किन्तु आज भी भारत विश्व में लाख का सबसे बड़ा उत्पादक एवं निर्यातक देश है। वर्तमान में भारत के पं.बगाल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में लगभग लाख उत्पादन किया जाता है। भारत के कुल लाख उत्पादन का लगभग 90 प्रतिशत उत्पादन छत्तीगसगढ़, झारखण्ड, पं.बंगाल, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश में होता है। भारत में वर्ष 2006–07 में लगभग 23229 टन स्टिक लाख, वर्ष 2007–08 में लगभग 20640 टंन 2008–09 में लगभग 17175 टन, 2009–10 लगभग 16495 टन तथा 2010–11 में लगभग 9035 टन स्टिक लाख का उत्पादन हुआ।

भारत के कुछ हिस्सों में लाख की फसल कमजोर होने के कारण तथा विदेशी अनुबंध को पूरा करने के लिये आवश्यकतानुसार विदेशों जैसे इण्डोनशिया, थाईलैण्ड चाईना आदि से लाख आयात किया गया। भारत व्दारा वर्ष 2004–05 से 2008–09 की अवधि में कुल आयातित लाख की मात्रा 23009.22 टन थी एवं इसका मूल्य 17054.52 लाख रूपए था।

वर्तमान में भारत में उत्पादित कुल लाख का लगभग 80 प्रतिशत विदेशों में जैसे बंगालादेश, जर्मनी, इण्डोनेशिया, यू.एस.ए, इटली, चाइना, स्पेन, कीनिया आदि को निर्यात किया जाता है। भारत से वर्ष 2005–06 से 2009–10 की अवधि में कुल निर्यात किये गये लाख की मात्रा 35940.52 टन थी, जिससे 66578.17 लाख रूपए आय प्राप्त हुई। अतः लाख उद्योग विदेशी मुद्रा अर्जन की दृष्टि से महत्वपूर्ण उद्योग है।

चतुर्थ अध्याय में छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग की विकासात्मक स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य भारत के प्रमुख लाख उत्पादक राज्यों में से एक है। भारत के कुल लाख उत्पादन का लगभग 35 प्रतिशत उत्पादन छत्तीसगढ़ में होता है। वन संपदा से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में लाख पालन के दृष्टिकोण से उत्तम वृक्ष जैसे कुसुम, पलाश एवं बेर आदि बहुतायत में पाये जाते है। राज्य में मुख्य लाख उत्पादन क्षेत्र पूर्व भानुप्रतापपुर, बस्तर, नारायणपुर, पूर्व सरगुजा , राजनांदगांव, उदंती, कोरबा, कटघोरा तथा जांजगीर, चांपा आदि है।

छत्तीसगढ़ में वर्ष 2006–07 में 8875 टन, 2007–08 में 7160 टन एवं 2008–09 में 7198 टन स्टिक लाख का उत्पादन किया गया। जो समूचे देश में सर्वाधिक था, इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ लगातार तीन वर्षो तक स्टिक लाख उत्पादन में प्रथम स्थान पर था।

लाख उद्योग वनोपज पर आधारित होने के कारण छत्तीसगढ़ में लाख उद्योग स्थापित हुए है। वर्तमान में राज्य में लाख की कुल 26 इकाईयां कार्यरत है। जिनमें शीडलैक, शैलेक बटन लैक आदि का निर्माण किया जाता है देश में सर्वप्रथम पं. बंगाल, एवं इसके पश्चात् व्दितीय स्थान पर छत्तीसगढ़ की लाख औद्योगिक इकाईयों व्दारा सर्वाधिक स्टिक लाख का प्रयोग किया जाता है।

लाख उद्योग श्रम प्रधान है अतः इन औद्योगिक इकाईयों के माध्यम से बहुत से लोगो को रोजगार प्राप्त हुआ है। राज्य में लाख उत्पादन की वृद्धि हेतु शासन व्दारा विभिन्न प्रयास किये जा रहे है एवं परियोजनाएं संचालित की जा रही है। जिनके सकारात्मक परिणाम परिलक्षित हो रहे है।

पंचम अध्याय में धमतरी जिले का सामान्य परिचय दिया गया है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भाग मे स्थित धमतरी जिला 06 जुलाई सन् 1998 को अस्तित्व में आया। जिला $20^{0}2'$–$21^{0}1'$ उत्तरी अक्षांश एवं $81^{0}23'$–$82^{0}10'$ पूर्वी दक्षांश के मध्य स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 4081.93 वर्ग कि.मी. है। जिले की कुल जनसंख्या 799781 है जिसमें पुरूषों की संख्या 397897 तथा महिलाओं की संख्या 401884 है। धमतरी जिले में साक्षरता का प्रतिशत 78.36 प्रतिशत है।

जिले में तापमान सामान्य रहता है, जिले में वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है। यहां की प्रमुख फसल धान है। जिले के कुल क्षेत्रफल का लगभग 52.07 प्रतिशत वनक्षेत्र है। जिले में लघु उद्योगों की संख्या अधिक है जबकि वृहद् एवं मध्यम उद्योगों की संख्या नगण्य है।

षष्टम अध्याय में धमतरी जिले मे लाख उत्पादन, जिले में लाख उद्योग का विकास, औद्योगिक इकाईयों का संरचनात्मक अध्ययन, विपणन व्यवस्था का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। राज्य का 52 प्रतिशत भू–भाग वनों से आच्छादित है अतः यहां लाख के मेजबान पोषक वृक्ष पर्याप्त संख्या में पाये जाते है। धमतरी जिले में राजिम, नगरी, सिहावा, केरेगांव आदि क्षेत्रों में लाख का उत्पादन किया जाता है।

राज्य में धमतरी जिले का लाख उद्योग में महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य में स्थापित लाख की 26 इकाईयों में से 14 इकाईयॉ धमतरी जिले में स्थापित है। इन औद्योगिक इकाईयों में विनियोजित कुल पूंजी लगभग 254880000 रू. है इनमें शीडलैक, शैलेक, ब्लीच्ड लैक आदि का निर्माण किया जाता है। उद्योगपतियों व्दारा लाख के विभिन्न रूपों का विक्रय स्वयं या ब्रोकर के माध्यम से देश एवं विदेशों में किया जाता है। जिले में औद्योगिक इकाईयों में निर्मित कुल लाख का लगभग 5 प्रतिशत विदेशों में तथा शेष राज्य एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों में निर्यात किया जाता है।

औद्योगिक इकाईयों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि जिले में लाख उद्योग महत्वपूर्ण एवं लाभदायक उद्योग है इस उद्योग में कम पूंजी विनियोजन से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा श्रम प्रधान होने के कारण यह उद्योग लोगों को रोजगार एवं आय के अवसर प्रदान करने में सक्षम है।

अध्याय सप्तम में धमतरी जिले में लाख उद्योग के विकास में शासन की भूमिका प्रस्तुत की गई है। जिले में लाख उत्पादन तथा उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिये शासन व्दारा विभिन्न कार्य किये गये है जैसे क्षेत्रीय युवाओं को प्रशिक्षण देना, कृषकों को उत्पादन की नई तकनीक से अवगत कराना एवं प्रशिक्षण देना तथा लाख विपणन हेतु मार्गदर्शन देना आदि कार्य किये जा रहे है। इसके अतिरिक्त विभिन्न

योजनाएं जैसे स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, लाख विकास योजना एवं यूरोपियन कमीशन परियोजना के माध्यम से कृषकों को लाख उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक की जानकारी एवं प्रशिक्षण, लाख उत्पादन एवं प्रसंस्करण हेतु सुविधाएं एवं सहायता प्रदान की जा रही है। शासन व्दारा किये गये इन प्रयासों के आशातीय परिणाम दृष्टिगोचर हो रहे है।

अध्याय अष्टम में छत्तीसगढ़ एवं धमतरी जिलें में लाख उद्योग के विकास की समस्याओं को बताते हुए सुझावों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। लाख उद्योग की प्रमुख समस्या मूल्य में अस्थिरता, विदेशी बाजार में प्रतिस्पर्धा तथा निर्यात पर निर्भरता है। इसके अतिरिक्त मध्यस्थों पर निर्भरता, किसानों का मध्यस्थों व्दारा शोषण, आधुनिक तकनीक के ज्ञान के अभाव में एवं उत्पादन संबंधी त्रुटियों के कारण क्षमता अनुरूप उत्पादन का नही होना, मेजबान वृक्षों का पूर्ण दोहन न होना आदि अन्य समस्याए है।

इन समस्याओ के समाधान हेतु स्थिर मूल्य नीति को अपनाते हुए विदेशो पर निर्भरता को कम किया जाना चाहिये। विदेशों पर निर्भरता कम करने के लिये घरेलू खपत को बढ़ाया जाना चाहिए, जिससे निर्यात पर निर्भरता कम होने से विदेशी प्रतिस्पर्धा का सामना करने में आसानी होगी। इसके अतिरिक्त किसानों को लाख खेती की महत्ता बताते हुए लाख उत्पादन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए तथा उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक को अपनाया जाना चाहिए जिससे वृक्षों का पूर्ण दोहन किया जा सकेगा तथा अधिकाधिक उत्पादन संभव होगा। लाख उत्पादक क्षेत्रों के आसपास लाख प्रसंस्करण केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए जिससे लोगों को रोजगार एवं आय के अवसर प्राप्त होंगे। शासन व्दारा किये जा रहे प्रचार प्रसार में वृद्धि की जानी चाहिये तथा किये जा रहे प्रयासों का सफल क्रियान्वयन होना चाहिये।

अध्याय नवम् में छत्तीसगढ़ एवं धमतरी जिले में लाख उद्योग के विकास की संभावनाओं को बताया गया है। शोध विषय के अध्ययन के पश्चात् यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि राज्य एवं जिले में लाख उद्योग के विकास की भरपूर संभावनाएं है। क्षेत्र में लाख औद्योगिक इकाईयों को कच्चे माल की पर्याप्त पूर्ति हो रही है तथा उद्योग के विकास के लिये आवश्यक श्रम, परिवहन, वित्तीय तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में लाख की मांग पूर्ति की तुलना में अधिक है तथा भविष्य में इसकी मांग बढ़ने की संभावनाएं है, अतः लाख की बढ़ती मांग भी इस उद्योग के विकास की संभावनाओं को बढ़ाती है।

अध्याय दशम् में उपसंहार तथा शोध विषय के गहन अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष को बताते हुए सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। औद्योगिक इकाईयों के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि क्षेत्र में लाख उद्योग एक लाभदायक उद्योग है जिसके विकास की प्रबल संभावनाएं है। वन संपदा से संपन्न राज्य एवं जिले में औद्योगिक इकाईयों को कच्चे माल की निरन्तर पूर्ति संभव है। इसके अतिरिक्त श्रम, परिवहन, वित्तीय तथा अन्य सुविधाओं की उपलब्धता उद्योगो के विकास को गति प्रदान करती है। लाख के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग के कारण देश एवं विदशों में लाख की मांग में निरन्तर वृद्धि हो रही है अतः इन उद्योगो के विकास से मांग के अनुरूप पूर्ति को संभव बनाया जा सकता है जिससे उद्योग से संबंधति सभी पक्ष निश्चित ही लाभान्वित होंगे। राज्य एवं जिले में लाख आधारित कुटीर उद्योगों को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे कम लागत मे अधिक लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी तथा लाख की खपत बढ़ने से लाख लाख उद्योग पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अतः निश्चित ही राज्य एवं जिले में लाख उद्योग के विकास की प्रबल संभावनाएं है, इसके विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे अधिकाधिक लोगों को रोजगार एवं आय के अवसर प्राप्त होगें, उनके जीवन स्तर में सुधार होगा तथा राज्य एवं जिले के औद्योगिक विकास में लाख उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।